Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

* Vol-2* *Issue-11* *November 2025*

www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

स्नातक विद्यार्थियों में संस्थान संतुष्टि का महत्व

अमर सिंह

सहायक आचार्य, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर (उ.प्र.)

डॉ0 गौरव राव

आचार्य, शिक्षा संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सारांश–

शिक्षा के किसी भी स्तर के विद्यार्थियों में संस्थान संतुष्टि एक ऐसा सकारात्मक आत्म भाव या अनुभव के समान है जिसके उच्च स्तर से विद्यार्थियों में प्रेरणा का संचार होता है। यह प्रेरणा उनको उस शिक्षण संस्थान से जहाँ वे अध्ययनरत हैं बाहरी एवं आंतरिक दोनों रूप से जोड़े रखने में मदत करती है। इस संतुष्टि का स्तर विद्यार्थियों में जितना अधिक उच्च होगा वे उतना ही अधिक शिक्षण संस्थान की समग्र क्रियाकलापों में भाग लेने के लिए उत्साहित रहेंगे। इससे न केवल अध्यापन और अधिगम स्तर में सुधार की संभावनाओं का मार्ग प्रशस्त होगा बल्कि शिक्षण संस्थान के समग्र क्रियाकलापों को सुचारू रूप से संचालित करने के असीमित मार्ग तलाशे जा सकेंगे। वह इसलिए क्योंकि शिक्षा की सरंचना और संगठन को पुनरीक्षित करने के लिए जो भी नीतियाँ बनायीं जाती हैं एवं सरकारी तंत्र द्वारा जो निर्णय लिए जाते हैं वह शिक्षा के केंद्र बिंदु बालक तथा समाज में उसकी आवश्यकता को ध्यान में रखकर ही लिए जाते हैं। जब समूची शिक्षा का केंद्र बिंदु बालक है तो क्यों न उन शिक्षण संस्थानों जो वर्तमान समय में शिक्षा दीक्षा का कार्य करते हैं उनकों इस तरह से विकसित और संगठित किया जाये कि वे शिक्षण और प्रशिक्षण कार्य के साथ–साथ बालक की पसंद स्तर में उच्चतम स्तर को छुएं। यह पसंद का उच्च स्तर विद्यार्थियों में अपने अध्ययनकाल के दौरान एक खुशनुमा शैक्षिक जीवन का भाव विकसित करेगा जिससे विद्यार्थी उस संस्थान से अच्छी तरह से समायोजित हो सकेंगे और उच्च आकादमिक उपलब्धि को प्राप्त कर सकेंगे। यह संतुष्टि का स्तर न केवल विद्यार्थियों के स्वयं अध्ययन को गति देने में मदतगार साबित होगा बल्कि शिक्षक के अध्यापन कार्य में बालक की अन्तक्रियात्मकता को कैसे बढ़ाया जाये इसके लिए मार्ग तलाशने में सहयोग करेगा। यह संतुष्टि का भाव विद्यार्थियों में शिक्षण संस्थान के भौतिक संसाधनों जैसे आकर्षक भवन और उसमें स्वच्छ पेयजल तथा साफ सुथरे शौंचालयों की व्यवस्था, अच्छी कुर्सियां और बैठने का उचित प्रबंध, हवादार और आधुनिक शिक्षण प्रशिक्षण कक्ष, किसी कक्ष विशेष में विद्यार्थियों की सीमित संख्या और पर्याप्त शिक्षण एवं अध्यापन संसाधन की उपलब्धता, मानक अनुसार शिक्षक संख्या और उनकी विषय समझ, स्वास्थ्य उपचार की व्यवस्था, पुस्तकालय, प्रयोगशाला एवं छात्रावास व्यवस्था आदि अन्य संसाधनों की समुचित व्यवस्था पर तो निर्भर करता ही है साथ ही बहुत से अभौतिक अथवा आंतरिक कारक होते हैं जिनसे विद्यार्थियों की संस्थान संतुष्टि सीधे तरह से प्रभावित होती है। इन आंतरिक कारकों में शिक्षक और विद्यार्थियों एवं विद्यार्थियों और विद्यार्थियों के बीच सकारात्मक सम्बन्ध, शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों पर स्नेहपूर्ण व्यवहार, अवसरों की समानता, अवरोध–मुक्त वातावरण तथा सुरुक्षित भविष्य आदि से है। इन मूलभूत सुविधाओं के अतिरिक्त विद्यार्थियों का स्वयं का प्रत्यक्षण, बुद्धि, सृजनात्मक क्षमता, व्यक्तित्व आदि अभौतिक कारक हैं जो संस्थान संतुष्टि को प्रभावित करते हैं। पूर्व में हुए अनेकों अध्ययनों से यह विदित है कि विद्यार्थियों की बुद्धि (रचना, 2007 पृ.सं. 43), सृजनात्मकता (चौमेडेस, 1996 पृ.सं. 71), सामाजिक आर्थिक स्तर (एनेनी, 2008 पृ.सं. 54) तथा व्यक्तित्व आदि संस्थान संतुष्टि में एक कारक की भूमिका निभाते हैं।

इसकी अपेक्षा अगर विद्यार्थियों में अध्ययनरत शिक्षण संस्थान के प्रति किसी असुविधा का अनुभव महसूस हो रहा है जिससे वे वहां प्रसन्नता और खुले वातावरण, आत्मिक स्वतंत्रता एवं अपने विचारों को बिना रोकटोक के

प्रदर्शन नहीं कर पा रहे हैं तो वहां इस बात की अधिक सम्भावना हो सकती है कि विद्यार्थी संस्थान असंतुष्टि का अनुभव महसूस करें। संस्थान असंतुष्टि के कारण इन विद्यार्थियों की न तो शैक्षिक उपलब्धि श्रेष्ठ हो पाती है और न ही यह अपने सामाजिक और आर्थिक जीवन में कोई विशेष सफलता अर्जित कर पाते हैं। सामाजिक जीवन में इसलिए असफल होते रहते हैं क्योंकि आयु के एक बड़े दौर को इन्होंने उन शिक्षण संस्थाओं में बिता दिया जहाँ वे अपनी संस्थान असंतुष्टि के भाव के कारण न तो शिक्षकों से अच्छे पारस्परिक सम्बन्ध बना पाए और न ही अपने सहपाठियों से अच्छे सामाजिक कौशलों को सीख पाए। आज इस बात के चिंतन की बहुत आवश्यकता है कि शिक्षा के किसी भी स्तर की सरंचना और उसके संगठन की आधारशिला को मजबूत तभी किया जा सकता है जब शिक्षण संस्थान में अध्ययनरत विद्यार्थी उसके प्रति संतुष्टि का भाव रखते हों। संस्थान संतुष्टि की भावना उनमें आज्ञाकारिता की ज्योति जलाकर उन्हें अनुशासित बनाने में भी मदत करती है। संस्थान के प्रति संतुष्टि की भावना ही है जो उन्हें प्रतिदिन शिक्षण संस्थान आने के लिए प्रेरित करती है। यह शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच विश्वास की डोर को मजभूत करने में अहम् भूमिका निभाती है। इस प्रकार यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नही होगी कि जबतक विद्यार्थियों में संस्थान संतुष्टि की भावना को सकारात्मक दिशा में विकसित नही कर दिया जाता तबतक इन्हें शिक्षण अथवा प्रशिक्षण देना एक कोरी कल्पना होगी। यह कहना इसलिए और उचित हो जाता है क्योंकि जबतक अध्यापन में इन विद्यार्थियों की सहभागिता नही बढ़ेगी तबतक अध्यापन और अधिगम की प्रक्रिया को संचालित कर पाना बहुत मुश्किल कार्य होगा। इस प्रकार यह आवश्यक है की संस्थान संसाधनों तथा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व शीलगुणों को धनात्मक दिशा देकर संस्थान सतुष्टि को कायम रखने का प्रयास निरंतर किया जाता रहे।

मुख्य शब्द– संस्थान संतुष्टि, असंतुष्टि, आधारभूत भौतिक संसाधन

प्रस्तावना

आज वर्तमान में समाज के अधिकांश तबके के लोग यह महसूस करते हैं कि शिक्षा ही जीवन के विकास की आधारशिला है। केवल शिक्षा ही उनको उपेक्षित व्यवहार से बचा सकती है और समाज में उनके निम्न स्तरीकृ त पद अथवा प्रतिष्ठा में सुधार ला सकती है। इस महत्वाकांक्षा से प्रभावित होकर आज सभी समाज के निचले तबके के लोग अपने बालकों को शिक्षा प्राप्त कराने की धारणा में अग्रसित हो रहे हैं। शिक्षा प्राप्ति की इस महत्वाकांक्षा का ही प्रमाण है कि भारतीय जनगणना 2011 के अनुसार अब साक्षरता दर 74.04 प्रतिशत हो गयी है जिसमें भारतीय राज्य केरल अग्रणी है। समाज के लोगों में शिक्षा प्राप्ति की इस जागरूकता को तब और बढ़ने के रास्ते खुलते हैं जब शिक्षा दीक्षा का कार्य कर रहीं शिक्षण संस्थाएं विद्यार्थियों के धनात्मक विकास के लक्ष्य से प्रेरित होकर कार्य करती हैं। कोई भी शिक्षण संस्थान तभी सही अर्थों में विद्यार्थियों का उचित विकास कर सकता है जब उसमें विद्यार्थियों के विकास के लिए पर्याप्त संसाधन हों। उसमें स्वच्छ पेयजल, पर्याप्त शौंचालय, अध्ययन कक्षों, खेल–कूद मैदान, पुस्तकालय भवन, शिक्षण सामग्री, साफ–सुथरे छात्रावासों, तकनीकी युक्त शिक्षण अध्ययन कक्षों, भवन प्रबंध, कंप्यूटर, इन्टरनेट एवं वाई–फाई नेटवर्क आदि का पर्याप्त रूप में होना अति आवश्यक है। इन भौतिक संसाधनों की उचित व्यवस्था से विद्यार्थियों में संस्थान के प्रति संतुष्टि की भावना विकसित होती है। यह संतुष्टि की भावना उनको उस संस्थान से निरंतर जोड़े रखने में मदत करती है। इसके साथ ही शिक्षण संस्थान में विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों का प्रेम, करुणा या सौम्यता से जुड़ा व्यवहार न केवल विद्यार्थियों में आज्ञाकारिता, सम्मान तथा खुशी का आत्मभाव विकसित करता है बल्कि लगातार शिक्षण संस्थान में उनकी उपस्थिति को भी बढ़ाने में मदत करता है।

विद्यार्थियों की कुछ प्रमुख मूलभूत आवश्यकताएं हैं जैसे साफ–सुथरे छात्रावासों की व्यवस्था तथा उनमें पौष्टिक भोजन की उपलब्धता, खेल–कूद मैदान, स्वच्छ पेयजल तथा शौचालयों आदि की व्यवस्था। इनका प्रबंधन तो लगभग सभी शिक्षण संस्थानों में सीमित अथवा पर्याप्य रूप में होता ही है लेकिन गुणवत्ता के स्तर में बहुत अंतर पाया जाता है। जिन संस्थानों में इनका प्रबंधन उच्च मानकों के तहत किया जाता है वहां विद्यार्थी संस्थान संतुष्टि के स्तर में अच्छे पाए जाते हैं। इन संस्थानों की अपेक्षा जहाँ इनकों अधिक प्रमुखता के आधार पर संचालित नहीं किया जाता है वहां अक्सर छात्र अपने हितों की रक्षा के लिए आये दिन आंदोलन करते रहते हैं। इस प्रकार संसाधनों के अभाव में विद्यार्थियों में तनाव उत्पन्न होते हैं जिसके कारण यह विद्यार्थी शिक्षण संस्थान के अन्य संसाधनों को क्षति पहुचाते रहते हैं। कमल, 2019 में विद्यार्थियों के तनाव और उनकी संस्थान संस्तुष्टि के मध्य नकारात्मक सहसंबंध पाया अर्थात जो विद्यार्थी तनाव से पीड़ित थे उनमे संस्थान संतुष्टि नहीं पाई गयी थी।

स्नातक विद्यार्थियों में संस्थान संतुष्टि की आवश्यकता?

स्नातक शिक्षा, शिक्षा का वह स्तर होता है जहाँ विद्यार्थियों में अपने व्यवसाय प्राप्ति को लेकर बहुत सी चिंताएं

पनपने लगती हैं और ऐसा उन स्नातकों के साथ जाएदा होता है जो आर्थिक रूप से निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर से सम्बन्ध रखते हैं। अपने निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर को बेहतर करने के लिए वे महसूस करने लगते हैं कि शिक्षा ही वह माध्यम है जिसे पाकर समाज में अपनी एक अलग पहचान बनायी जा सकती है। ऐसा तभी हो सकता है जब वह एक अदत रोजगार प्राप्त कर लें लेकिन वर्तमान समय में जायदातर रोजगार प्राप्ति के लिए लिखित परीक्षा में प्रयोग होने वाले पेपर और महाविद्यालय की समग्र क्रियाकलापों में विद्यार्थी की संलिप्तता दो अलग–अलग धाराएं हो जाती हैं। इसका एक प्रमाण यह है कि एक सामान्य बुद्धि स्तर वाला बालक अपने कठिन परिश्रम के बल पर किसी अच्छे पद पर पहुंच जाता है और उच्च बुद्धि स्तर वाला बालक अपने अच्छे और अनुशासित महाविद्यालयी जीवन को जीकर भी उन प्रतियोगिताओं को पास नहीं कर पाता जो उसकी योग्यता स्तर से निम्न थीं। इसका कारण ज्ञान की दो धाराओं को होना है। वर्तमान समय में किसी भी स्तर की प्रतियोगिता परीक्षा के अधिकांश पदों का निर्माण स्मरण क्षमता के आधार पर किए जाने का प्रचलन सा बनता जा रहा है जिसको पास करने के लिए विद्यार्थी से स्वाध्याय की अत्यंत आवश्यकता महसूस की जाती है। ऐसे में उनकी उपस्थिति का स्तर निम्न रहता है इसलिए यह विद्यार्थी महाविद्यालयी जीवन से अलग–थलग नजर आते हैं जिससे उनका संस्थान संतुष्टि का स्तर निम्न समझ लिया जाता है लेकिन आवश्यक नहीं कि वे संस्थान के प्रति असंतुष्टि का अनुभव करते हों। इस समस्या का समाधान अच्छी तरह से तभी किया जा सकता है जब शिक्षक अपने शिक्षण–प्रशिक्षण में उन उपागमों, विधियों और प्रविधियों को सम्मिलित करें जिससे यह विद्यार्थी अपने संस्थान में प्रतिदिन आकर कुछ नई चीजे सीखें और जो प्रतियोगिता परीक्षा में काम आये। संक्षिप्त रूप में कहा जाये तो समूची उच्च शिक्षा में कुछ ऐसे नवीन परिवर्तन करने की आवश्यकता है जो विद्यार्थियों को न अपने केवल शिक्षण संस्थान से जोड़ने में मदत करे बल्कि उन्हें रोजगार प्राप्त करने में भी सहयोग करे।

शिक्षा के इस स्तर पर कुछ ऐसे विद्यार्थी भी होते हैं जिनका शिक्षा प्राप्ति का लक्ष्य कोई पद/प्रतिष्ठा प्राप्त करना नहीं होता, अगर यह कहें कि केवल डिग्री प्राप्त करना भर इनका ध्येय होता है तो कोई गलत नहीं होगा। इस सच्चाई को नकार नहीं सकते कि वर्तमान में शिक्षा के उच्च स्तर पर ऐसे विद्यार्थियों की संख्या बड़ी तेजी से बढ़ रही है। इनकी उपस्थिति निम्न रहने पर इनका सम्बन्ध उन विद्यार्थियों से कभी नहीं किया जा सकता जो पद या कामयावी के लिए शिक्षण संस्थान में अपनी उपस्थिति को संतुलित नहीं रख पाते। इस प्रकार केवल उपस्थिति संस्थान संतुष्टि या असंतुष्टि का आधार नहीं हो सकता लेकिन यह कहना उचित होगा कि संस्थान असंतुष्टि विद्यार्थियों की उपस्थित को निम्न जरुर करती है। बहुत से ऐसे भौतिक और अभौतिक/आंतरिक कारक हैं जो संस्थान के प्रति स्नातक विद्यार्थियों की संतुष्टि को प्रेरित करते हैं। इस प्रकार आवश्यक हो जाता है कि केंद्र स्तर की नीतियों/घोषणाओं को जब संस्थागत स्तर पर लागू किया जाए तो उसमें पारदर्शिता पर विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। पारदर्शिता के अभाव में शिक्षा की पूरी सरंचना को भारी आघात पहुंचता है जिससे विद्यार्थियों में असंतुष्टि की भावना उत्पन्न होती है। इस प्रकार शिक्षकों की चयन प्रक्रिया पूरी तरह से पारदर्शी हो, आवंटित बजट को शिक्षा की हर मद के लिए आवश्यकतानुसार खर्च किया जाये, शिक्षकों के समायोजन स्तर को सुधारना चाहिए जिससे विद्यार्थियों पर उनके व्यवहार में शालीनता आये। स्नातक विद्यार्थी अपने शारीरिक संतुष्टि और मानसिक खुशी के लिए जिन आवश्यकताओं का अनुभव महसूस करते हैं सामान्यता वही आवश्यकताएं इनकी संस्थान संतुष्टि का आधार बन जाती हैं जैसे बहुत से स्नातक विद्यार्थी ऐसे हो सकते हैं जिनका शिक्षा प्राप्ति का लक्ष्य सिर्फ डिग्री प्राप्त करना है तो ऐसे विद्यार्थियों की संस्थान संतुष्टि का आधार शिक्षण विधियों, पुस्तकालय, आधुनिक और तकनीकी–युक्त मिश्रित अध्ययन–अध्ययापन कक्ष आदि से न रहकर आवश्यक है कि अन्य आधारभूत सुविधाओं जैसे संस्थान भवन, पेयजल व्यवस्था, स्वच्छ शौचालय प्रबन्ध, साफ छात्रावास और पौष्टिक भोजन की व्यवस्था आदि की तरफ अधिक हो। ऐसे विद्यार्थी जिनका उद्देश्य केवल अध्ययन–अध्यापन है तब इन विद्यार्थियों की रूचि संस्थान के शिक्षण–प्रशिक्षण, शिक्षक की योग्यता और उसकी पढ़ाने की विधि के प्रति अधिक रहती है और इसलिए इन विद्यार्थियों का संस्थान संतुष्टि का स्तर पढ़ने, कुछ नया सीखने और शिक्षकों के नवाचारी शिक्षण से बढ़ता है। इस प्रकार इन विद्यार्थियों में संस्थान के अन्य सीमित या असीमित संसाधनों के प्रति रूचि बहुत अल्प रह जाती है। अतरू यह कहा जा सकता है कि संस्थान संतुष्टि स्नातक विद्यार्थियों की मूलभूत आवश्यकता की संतुष्टि पर निर्भर करती है जैसे कुछ के लिए शिक्षकों का प्रशिक्षित होना उनकी मूलभूत आवश्यकता की संतुष्टि है क्योंकि उसके प्रशिक्षित होने पर ही उसे सीखने में मदत मिलती है तो कुछ के लिए केवल आरामदायक संसाधनों से लुफ्त उठाना ही संस्थान संतुष्टि हो सकती है। इस प्रकार शिक्षण संस्थान में इन आधारभूत सुविधाओं की व्यवस्था करना अति आवश्यक हो जाता है क्योंकि इनके अभाव में अपव्यय व् अवरोधन की समस्याएं बढ़ सकती हैं।

सम्बंधित साहित्य का सर्वेक्षण–

इस शोध–पत्र की आवश्यकता को ध्यान में रखकर शोधार्थी ने पूर्व में हो चुके संस्थान संतुष्टि से सम्बंधित अध्ययन कर जानने का प्रयत्न किया कि बदलते समय और परिस्थितियों में स्नातक विद्यार्थियों में संस्थान संतुष्टि का स्तर किन–किन कारणों से प्रभावित होता है। सम्बंधित साहित्य के अध्ययनों का विवरण कुछ इस प्रकार है–

तालिका संख्या (1) विदेशों में हुए संस्थान संतुष्टि से सम्बंधित अध्ययन

शोधार्थी	वर्ष	न्यादर्श विधि	न्यादर्ष संख्या	सम्बंधित चर	अनुसन्धान विधि	परिणाम
के. लेक्सिन	1996	यादृच्छिक न्यादर्ष	500	संस्थान संतुष्टि एवं निर्देशन	सर्वेक्षण विधि	निर्देशन के समान तरीके विद्यार्थियों में संस्थान संतुष्टि को बढ़ाते हैं
एल. चैमेडेस	1996	सोद्धेश्य न्यादर्ष	600	व्यक्तित्व सृजनात्मकता, शिक्षण रणनीतियां एवं संस्थान संतुष्टि	प्रयोगात्मक विधि	विद्यार्थियों की सृजनात्मकता और उनकी क्षमताओं का प्रभाव उनकी संस्थान संतुष्टि पर पड़ते हुए पाया गया
एनेनी	2008	यादृच्छिक न्यादर्ष	450	संस्थान संतुष्टि एवं सामाजिक और आर्थिक स्तर	सर्वेक्षण विधि	निम्न सामाजिक और आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों में संस्थान संतुष्टि उच्च थी आयु स्तर में 10 से 12 वर्ष के विद्यार्थियों में संस्थान संतुष्टि उच्च थी

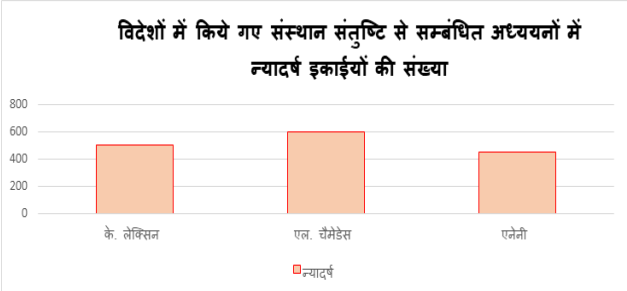

शोधार्थी	वर्ष	न्यादर्श विधि	न्यादर्ष संख्या	सम्बंधित चर	अनुसन्धान विधि	परिणाम
टी. अमित	1986	यादृच्छिक	550	सामाजिक और आर्थिक स्तर, संस्थान संतुष्टि, आत्मछवि, आत्मवलोकन तथा आत्मज्ञान	सहसंबंध विधि	छात्राओं की संस्थान संतुष्टि छात्रों से अधिक पाई गयीA
के. राज	1987	यादृच्छिक	600	संस्थान संतुष्टि तथा निर्देशन क्षमता	सर्वे विधि	स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के विद्यार्थी अर्द्धसरकारी महाविद्यालयों के छात्रों से अधिक संतुष्ट थेA
एस. कल्पना	1997	यादृच्छिक	500	संस्थान संतुष्टि तथा विद्यालय वातावरण	सहसंबंध विधि	29.82 प्रतिशत विद्यालय खुले वातावरण में चल रहे थे A 23.43 बंद वातावरण, 14.91 स्वनियंत्रित वातावरण मेंA
टी. रचना	2007	साधारण न्यादर्श विधि	550	सामाजिक आर्थिक स्तर, बुद्धि, विद्यालय संतुष्टि तथा आन्तुष्टि	सर्वेक्षण विधि	निजी स्कूलों के विद्यार्थियों में सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों की अपेक्षा संस्थान संतुष्टि कम थीA उच्च और सामान्य बुद्धि लब्धि वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा निम्न बुद्धि वाले विद्यार्थियों में संस्थान संतुष्टि अधिक थीA
एस. नीतू	2018	साधारण यादृच्छिक विधि	750	विद्यालय संतुष्टि तथा संक्रियात्मकता	सर्वेक्षण विधि	सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में संस्थान संतुष्टि उच्च पाई गयीA कला वर्ग के विद्यार्थियों में संस्थान संतुष्टि सबसे उच्च, विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में संस्थान संतुष्टि औसत पायी गयीA

तालिका संख्या (2) भारत में हुए संस्थान संतुष्टि से सम्बंधित अध्ययन

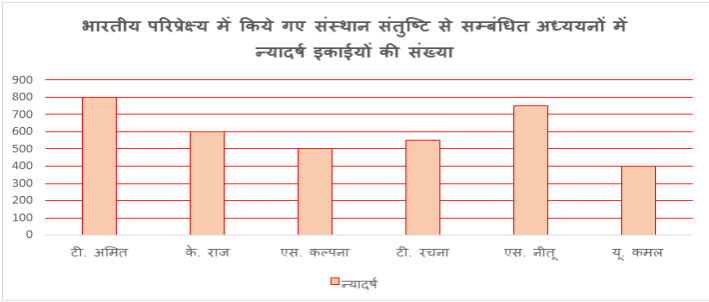

विद्यार्थियों में संस्थान संतुष्टि के स्तर को बढ़ाने वाले घटक–

प्रस्तुत शोध–पत्र में स्नातक विद्यार्थियों की संस्थान संतुष्टि को प्रभावित करने वाले कुछ घटकों की चर्चा इस प्रकार है–

प्रशिक्षित और विषय मर्मग्य शिक्षकों का चयन

विद्यालय और समाज का रिश्ता हमेशा से अटूट रहा है क्योंकि समाज के विकास की आधारशिला को तबतक उचित दिशा नही दी जा सकती जबतक शिक्षक प्रचलित शिक्षा के विकास के लिए कार्य न कर रहा हो। कहने का तात्पर्य यह है कि सामाजिक परिवर्तनों को केवल शिक्षक द्वारा ही उचित मार्ग में ढाला जा सकता है। केवल शिक्षा द्वारा ही समाज में परिवर्तन नहीं आते हैं बल्कि समाज भी अपनी आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा में परिवर्तन लाता है। किसी भी समाज की शिक्षा संरचना उसकी आवश्यकता के अनुसार ही होती है जैसे भारतीय समाज कि अपनी एक अलग संस्कृति और परम्परा है और इसलिए उसकी शिक्षा की प्रकृति भी कुछ इसी तरह से है जो इसे न केवल जीवित रख सके बल्कि आने वाली पीढ़ी को इसे हस्तांतरित कर सके। इसी तरह पाश्चात्य जगत की अपनी एक अलग परम्परा और संस्कृति है और उसकी शिक्षा भी कुछ वैसी ही है। प्राचीन समय में समाज की आवश्यकता आध्यात्मिकता को प्राप्त करना था और इसलिए शिक्षा का उद्धेश्य मानव को आत्मानुभूति की ओर ले जाना था लेकिन वर्तमान में शिक्षा का उद्धेश्य बदल चुका क्योंकि अब समाज की आवश्यकता आत्मा और परमात्मा को जानना न होकर जीविका अर्जित करना है।

समाज और विद्यालय का यह रिश्ता तभी बना रह सकता है जब शिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षित और विषय मर्मग्य शिक्षकों का चुनाव किया जाये। जिन शिक्षकों में अपने विषय में विशेष कौशल होते हैं वे संकाय सदस्यों में ही नहीं बल्कि विद्यार्थियों के लिए एक आदर्शमय शिक्षक की भूमिका में नज़र आते हैं। जिस शिक्षण संस्थान में ऐसे शिक्षकों की बहुलता होती है वहां के विद्यार्थी अपने तार्किक विचारों में अधिक संतुष्टि का अनुभव महसूस करते हैं। इस प्रकार आवश्यक है कि शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक सुधार के लिए विषय समझ वाले शिक्षकों का चयन किया जाये क्योंकि अगर इस पेशे में ऐसे लोगों का चयन किया जाता है जिनमें न तो विषय समझ है और न ही इस पेशे के प्रति कोई प्रतिबद्धता जैसी चीज है तो निश्चित ही शिक्षा में सकारात्मक बदलाव की संभावनाएं निचले पैदान पर खड़ी दिखाई देंगी। इस पेशे में अच्छे और विषय समझ वाले शिक्षकों का चयन हो। इसके लिए उन चयन आयोगों/निदेशालयों में सुधार की आवश्यकता है जो शिक्षक चयन की भूमिका का निर्वहन करते हैं। अभी भी हमारे देश में बहुत सी ऐसी सीधी भर्तियों के माध्यम से शिक्षकों का चयन किया जाता है जो किसी भी रूप में इस पेशे के लिए उचित नहीं ठहरता है। शिक्षक ही है जो कल के नागरिकों को विभिन्न क्षेत्रों के लिए मानव संसाधन की तरह तैयार कर सकता है। अगर शिक्षक ही विषय समझ से पूर्ण नहीं है तो इससे यह अपेक्षा कैसे की जा सकती है कि वह कल के सर्वश्रेष्ठ नागरिकों का विकास करने में सफल हो पायेगा? शिक्षक में प्रशिक्षण कौशल और विषय मर्मज्ञता दोनों का समावेशन जब होता है तब वह एक सफल शिक्षक की श्रेणी में गिना जाता है। वर्तमान समय में प्रशिक्षित और विषय मर्मज्ञ शिक्षकों की इस पेशे के लिए महती आवश्यकता दिखाई देती हुयी प्रतीत होती है। आयोग्य और साधारण विषय समझ न केवल उनके कक्षा को नीरस और गैर–अनुशासित बनाती है बल्कि अध्यापन और अधिगम का एक साथ चलना निरर्थक सा दिखाई देने लगता है। इस कमी के अनेक प्रमाण है जिसकी बजह से विद्यार्थियों में संस्थान असंतुष्टि की भावना का विकास होता है और इस प्रकार समय से पूर्व ही वे खुद को शिक्षण संस्थान से अलग कर लेते हैं। एस. कल्पना द्वारा किया गया अध्ययन इसका प्रमाण है कि 23.43 प्रतिशत विद्यालय बंद वातावरण में चल रहे थे। यह परिणाम प्रदर्शित करते हैं कि शिक्षकों में प्रशिक्षण का अभाव है जिसके कारण वे विद्यार्थियों को कठोर और नियंत्रित वातावरण में तैयार करने पर बल दे रहे हैं। आज आवश्यकता है शिक्षकों को प्रकृतिवादी बनने की क्योंकि एक सच्चा प्रक्रितिवादी शिक्षक ही विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक प्रकृति को सही से समझ सकता है और उसके अनुसार अपनी शिक्षण विधियों में सुधार लाकर विद्यार्थियों को उसकी क्षमता अनुसार विकसित करने में सहयोग कर सकता है।

मिश्रित शिक्षण विधियों का प्रयोग–

एक शिक्षक के लिए विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण विधियों, प्रविधियों तथा शैक्षिक उपकरणों के प्रयोग का विशेष ज्ञान होना अति–आवश्यक होता है क्योंकि वह अपने सन्देश को विद्यार्थियों तक तबतक सही रूप में नही पहुंचा सकता है जबतक वह अपने सम्प्रेषण कौशल में एक उचित विधि का प्रयोग नही कर रहा हो। शिक्षण विधियां एक माध्यम की तरह हैं जिनके द्वारा विद्यार्थियों को कोई पाठ्यवस्तु को अत्यंत सरल और व्यावहारिक रूप में पढाया जाता है। विद्यार्थियों की आयु, कक्षा, बुद्धि आदि को ध्यान में रखकर इन शिक्षण विधियों का चयन करके शिक्षक अपनी शिक्षण सामग्री को उचित रूप में विद्यार्थियों तक पहुंचाता है। एक प्रशिक्षित और जानकर शिक्षक

ही यह जानने में सफल हो पाता है कि विभिन्न वैक्तिक विभिन्नताओं वाले विद्यार्थियों की कक्षा में सामूहिक और समावेशित रूप से कौन सी शिक्षण विधियों से पढाना उत्तम होगा। अनुपयुक्त शिक्षण विधि द्वारा पढ़ाये जाने से विद्यार्थियों में नीरसता आती है, वे प्रश्न पूछना बंद कर देते और पढ़ाये जा रहे विषय के प्रति अपनी एकाग्रता कम कम करते चले जाते हैं। इस प्रकार कक्षा में नीरसता और एकाग्रता के अभाव में विद्यार्थियों में अपने संस्थान के प्रति असंतुष्टि पनपने लगती है और इसके कारण विद्यार्थियों में अपने संस्थान के प्रति सकारात्मक लगाव जैसी भावना का विकास कभी नहीं हो पाता। आज आधुनिक समय तकनीकी का दौर है इसलिए बालक शिक्षा को तकनीकी उपकरणों द्वारा अच्छी तरह से ग्रहण करने में सफल होता है। शिक्षा में तकनीकी के प्रयोग से व्यापक सुधार की संभावनाएं विकसित हुयी हैं। आज विद्यार्थियों को एकल विधि, प्रविधि एवं उपकरण के सहयोग से पढ़ाना अवैज्ञानिक सा प्रतीत होने लगा है। कक्षा को मिश्रित शिक्षण विधियों के माध्यम से पढ़ाने के रास्ते खोजे जा रहे हैं क्योंकि स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों में पहले से अधिक समझ और तकनीकी ज्ञान की अनुभव विकसित हो जाता है। इस प्रकार अपनी कक्षा को अधिक आधुनिक बनाने के लिए सम्भव है कि शिक्षक को तकनीकी ज्ञान की समझ होनी चाहिए। तकनीकी ज्ञान के अभाव में वह एक सफल शिक्षक होने की कल्पना नहीं कर सकता क्योंकि जिस विषय–वस्तु को तकनीकी प्रयोग जैसे पीपीटी या अन्य मृदुल साधनों से वह अपने विद्यार्थियों तक सामान्य और वैज्ञानिक आधार से पहुंचा सकता है उतने समय में कक्षा प्रदर्शन के माध्यम से शायद ही संभव हो पाए।

अवरोध मुक्त वातावरण–

स्नातक विद्यार्थी अपनी आयु स्तर में उस पड़ाव पर पहुँच चुके होते हैं जहाँ वे स्वतंत्र रूप में अपने स्वयं के निर्णायक चिंतन से कार्य करना शुरू कर देते हैं। ऐसे में जब शिक्षण संस्थानों में इनकी स्वयं की पहल और स्वतंत्र चयन की संभावनाओं को महत्व मिलता है तब इनके व्यक्तित्व विकास के मार्ग पहले से अधिक उन्नत होते जाते हैं। इस दृष्टि से यह अधिक आवश्यक हो जाता है कि उच्च अध्ययन संस्थान विद्यार्थी विकास की भावना से संचालित किये जाएँ। उच्च शिक्षा में यह शिक्षा का वह स्तर होता है जिसमें विद्यार्थी अपनी जीवन की पूर्व अवस्था से अधिक जिम्मेदारी के भाव के साथ जीना चाहता है। शिक्षा के इस स्तर पर आते–आते उसमें एक व्यवसाय प्राप्ति की कामना विकसित हो जाती है इसलिए उसे प्राप्त करने के लिए अब संघर्षपूर्ण जीवन यापन उसका ध्येय बन चुका होता है। इन कठिनाईयों और संघर्षपूर्ण जीवन में वह अपने अध्ययनरत शिक्षण संस्थान से बहुत अपेक्षाएं होती हैं कि जिस शिक्षा को वह प्राप्त कर रहा है वह उसके भविष्य को निश्चित ही उज्जल बनाएगी। इस प्रकार शिक्षण संस्थानों को आवश्यक है कि उसकी इस अपेक्षा और आशा को पूर्ण करने के मार्ग ढूंढने के लिए व्यापक कार्यों की खोज करें क्योंकि इस कार्य में अगर वे अपनी पहचान बनाने में असफल रहते हैं तो इस बात की बहुत सम्भावना है कि विद्यार्थी संस्थान से अलग–थलग दिखाई देने लग जाएँ। यह सभी कार्य एक खुले वातावरण में ही पूरे किये जा सकते हैं क्योंकि जबतक विद्यार्थियों को अपने विचार खुलकर प्रेषित करने के मौके नहीं दिए जायेंगे तबतक वे उच्च उपलब्धि को प्राप्त करने में पिछड़ते हुए नजर आयेंगे। अक्सर देखा जाता है अपनी मांगों और निरुकुश वातावरण के खिलाफ यह विद्यार्थी उच्च शिक्षण संस्थानों में हड़ताले/आन्दोलन करते रहते हैं। विद्यार्थियों द्वारा किये जाने वाले इन आन्दोलनों/हड़तालों से यही अनुमान लगाया जा सकता है कि यह विद्यार्थी अपने संस्थान के प्रति संतुष्ट नहीं हैं अर्थात वे असंतुष्टि के शिकार हैं। उसके बंद वातावरण में वे स्वयं को समायोजित करने में कोई रूचि नहीं रखते हैं। इस अरूचि और असमायोजन की धारा को शिक्षण संस्थानों से जबतक दूर नहीं किया जायेगा तबतक यह विद्यार्थी संस्थान संतुष्टि का अनुभव महसूस नहीं कर पाएंगे।

मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता–

विद्यार्थियों को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने या आगे बढ़ने में उन भौतिक संसाधनों की महती भूमिका होती है जिनका उपभोग वह प्रतिदिन अपने अध्ययनरत शिक्षण संस्थान में करते हैं। इनकी उपलब्धता से लक्ष्य को प्राप्त करना बहुत आसान हो जाता है क्योंकि भौतिक संसाधन ही शिक्षण संस्थान की नींव होते हैं। संसाधनों के अभाव में विद्यार्थियों में संस्थान असंतुष्टि का भाव उत्पन्न होने लगता है जिससे उनके सीखने, शैक्षिक उपलब्धि, स्वास्थ, समायोजन, व्यक्तित्व निर्माण, बौद्धिक विकास एवं सामाजिक–आर्थिक विकास आदि पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे अधिक सरल रूप में कहा जाये तो शिक्षक और विद्यार्थियों का अध्यापन और अधिगम कार्य तभी सफल हो सकता है जब शिक्षण संस्थानों में पर्याप्त रूप से भौतिक संसाधन उपलब्ध हों। इस प्रकार विद्यार्थियों को उच्च अकादमिक उपलब्धि प्राप्त करने एवं अपने लक्ष्य की तरफ आगे बढ़ने में शिक्षण संस्थान में उपलब्ध कुछ भौतिक संसाधनों की आवश्यकता होती है। यह भौतिक संसाधन अथवा आधारभूत सुविधाएं शिक्षण संस्थान का भवन, आधुनिक व् तकनीकीयुक्त शिक्षण कक्षों की व्यवस्था, वैज्ञानिक शिक्षण विधियाँ, शिक्षण सामग्री, पुस्तकालय भवन

में उचित रूप में वैठने की व्यवस्था व् उपलब्ध शिक्षण साहित्य, स्वच्छ व् साफ़ पेयजल का प्रबंध व् शौचालयों की व्यवस्था, शिक्षक का स्नेहपूर्ण व्यवहार प्रदर्शन आदि हैं जो उसकी अधिगम प्रक्रिया को गति प्रदान करने में अहम् भूमिका निभाते हैं। इन संसाधनों की यह भूमिका उनमें अपने अध्ययनरत संस्थान के प्रति संतुष्टि का भाव विकसित करने में सहयोग करती है। एक ऐसा स्नातक विद्यार्थी जिसका मुख्य उद्धेश्य उच्च अकादमिक उपलब्धि को अर्जित करना है द्य इसके लिए वह अपने शिक्षण संस्थान से उन अपेक्षाओं की पूर्ति का अनुभव करेगा जिनके द्वारा उसके अधिगम कौशल को विकसित होने की अपार संभावनाएं मिलती हों। ऐसे में वह चाहेगा कि शिक्षण संस्थान में विषय विद्वान शिक्षक हों जिन्हें उसके तार्किक प्रश्नों का जवाब देने में आनंद आता हो, साथ ही पर्याप्त शिक्षण और प्रशिक्षण संसाधन हों जो उसकी शैक्षिक गतिविधि को उसकी आशा के अनुसार आगे बढाने में सहयोग करते हों। अन्य भौतिक संसाधनों को वह अपनी रूचि में द्वितीय स्थान पर रख सकता है क्योंकि उसका मुख्य लक्ष्य अच्छी शिक्षा को प्राप्त करना है। यहाँ पर यह समझना बिल्कुल भी उचित नहीं होगा कि ऐसे विद्यार्थी संस्थान में साफ शौंचालय, स्वच्छ पेयजल एवं हवादार कमरों की व्यवस्था की कामना नहीं रखते। यह आवश्यकताएं उसकी शारीरिक आवश्यकताओं को कम करने में काफी सहयोग करती हैं जिसके उचित प्रबंधन की कामना वह निरंतर महसूस करता है। शिक्षकों के स्नेहमय व्यवहार से उन विद्यार्थियों में प्रेणा का संचार होता है जो अन्तर्मुखी प्रवृति के होते हैं और अपने विचारों को व्यक्त करने में अत्यंत शर्म महसूस करते हैं। शिक्षकों के स्नेहपूर्ण व्यवहार से यह विद्यार्थी अपनी असफलता में भी सफल होने के मार्ग खोजते हैं इसलिए ऐसे शिक्षकों के चयन की अपेक्षा की जाती है जो मनोवैज्ञानिक सोंच रखते हों। वैज्ञानिक शिक्षण सामग्री की उपलब्धता से विद्यार्थियों को सीखने में बड़ा सहयोग मिलता है क्योंकि अपनी अधिगम खोज में इन्हें इधर–उधर नहीं भटकना पड़ता है। शिक्षण संस्थान में एक अच्छे पुस्तकालय व्यवस्था से विद्यार्थियों को अपने अध्ययन में काफी सहयोग मिलता है। महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों में बहुत से ऐसे विद्यार्थी होते हैं जिनके पास पर्याप्त किताबे खरीदने के लिए धन का अभाव होता है। ऐसे में अगर उसको अपने संस्थान के पुस्तकालय से किताबे उपलब्ध हो जाती हैं तो वह संस्थान के प्रति संतुष्टि का अनुभव महसूस करने लगेगा।

संस्थान संतुष्टि की वर्तमान चुनौतियाँ

स्नातक विद्यार्थियों में संस्थान संतुष्टि को निरंतर बनाये रखने में वर्तमान समय में अनेकों ऐसी समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं जिनके कारण इन विद्यार्थियों में अपने शिक्षण संस्थान के प्रति असंतुष्टि की भावना विकसित हो रही है। आज अनेकों ऐसे शिक्षण संस्थान हैं जो सीमित संसाधनों में संचालित किये जाते हैं और इसका कारण संस्थान के पास पर्याप्त बजट का न होना है। साथ ही बहुत से ऐसे शिक्षण संस्थान हैं जो सरकारी बजट को व्यय करने में ईमानदारी का प्रदर्शन नहीं करते तो कुछ ऐसे उच्च शिक्षण संस्थान हैं जो अपने खराब बजट प्रबंधन के अभाव में मिले सरकारी बजट का केवल एक या दो मदों पर पूरा धन व्यय कर देते हैं। ऐसे में शिक्षण संस्थान में उन आधारभूत संसाधनों की कमी को पूरा नही कर पाते जिनकी व्यवस्था करना उस समय की मांग हैं।

उच्च शिक्षण संस्थान और खासकर विश्वविद्यालयों में शिक्षण भर्ती प्रक्रिया में उतनी पारदर्शिता को नही अपनाया जा रहा है जो एक प्रशिक्षित और विषय मर्मग्य शिक्षकों के चुनाव के लिए पर्याप्त हो। विश्वविद्यालय स्वायत्तता की आड़ में नियमों की अंधेखी के अनेक ऐसे प्रमाण है जो एक लोकतान्त्रिक समाज को बनाने में अपनी कोई भूमिका का प्रदर्शन नहीं करते हुए दिखाई देते। सामान्य सी बात है जब उच्च शिक्षा के मंदिरों में ऐसे अल्प विषय ज्ञाताओं और अल्प प्रशिक्षित शिक्षकों का चयन किया जायेगा तो विद्यार्थियों में संस्थान संतुष्टि की भावना को कैसे विकसित किया जा सकेगा। इस प्रकार शिक्षक भर्ती प्रक्रिया में पारदर्शिता को विस्थापित करने की आज बहुत आवश्यकता है।

शिक्षा पर कम बजट पेश किया जाना भी विद्यार्थियों में संस्थान संतुष्टि में बाधक है क्योंकि इसके अभाव में सरकारी तथा अर्द्ध–सरकारी शिक्षण संस्थान सीमित संसाधनों में ही चल सकते हैं। शिक्षा पर आज तक हमारे सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 6 प्रतिशत खर्च नही किया जा सका है (एन0ई0पी0 2020) जबकि यह संस्तुति एन0ई0पी0 1968 में ही की जा चुकी है। वर्तमान में नई शिक्षा नीति 2020 को लागू किया जा चुका है और इस नीति में भी इस मद के लिए 6 प्रतिशत खर्च करने की बात को दोहराया गया है लेकिन यह भविष्य के गर्त में छिपा है की इस पर कितना और किस रूप में खर्च किया जा जायेगा। शिक्षा पर कम बजट के कारण ही शिक्षण संस्थानों में पर्याप्त मूलभूत सुविधाओं की व्यवस्था नहीं हो पाती और इस प्रकार विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना सिर्फ किताबों में लिखी रह जाती है।

चुनौतियों का निराकरण–

स्नातक विद्यार्थियों में जब संस्थान असंतुष्टि की भावना विकसित होने लगती है तब उच्च शिक्षा में अपव्यय

व् अवरोधन तथा शिक्षा के प्रति अविश्वास जैसी समस्याएं उत्पन्न होने लगती हैं। इस प्रकार समय की आवश्यकता है कि जल्द ही स्नातक विद्यार्थियों में इन कारणों को खोजने के प्रयत्न किये जायें।

उच्च शिक्षण संस्थानों में पर्याप्त बजट के अभाव में जो भी समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं उनको चिन्नित करके समाधान के मार्ग तलाशे जाएँ। शिक्षण संस्थान को मिले बजट को व्यय करने के लिए ईमानदार और व्यय प्रबंधन में कुशल लोगों को चुना जाये जिससे बजट अनियमित्ताओं को समाप्त किया जा सके। यह आवश्यक है कि अगर बजट प्रबंधन में सतर्कता नहीं वर्ती गयी तो आधारभूत संसाधनों के अभाव में विद्यार्थियों में संस्थान संतुष्टि को बनाये रख पाना बड़ा मुश्किल कार्य होगा। महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में शिक्षक चयन की प्रक्रिया को और अधिक पारदर्शी करने की आवश्यकता है। शिक्षक चयन प्रणाली अगर पारदर्शी होगी तो विद्यार्थियों में संस्थान संतुष्टि के साथ ही साथ शिक्षा संतुष्टि की भावना का विकास होगा। विद्यार्थी यह अनुभव महसूस करेंगे की शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे भी एक पारदर्शी प्रणाली से गुजर कर अपनी योग्यतानुसार व्यवसाय को प्राप्त कर सकेंगे। आज भारतीय समाज 21वीं सदी में पदार्पण कर चुका है जहाँ परम्परागत विचारधारा से इतर जाकर लोग वैज्ञानिक सोंच के साथ अपना जीवन यापन करने को प्रयत्नशील हैं। वैज्ञानिक सोंच या वैज्ञानिक विचारधारा को तभी आगे बढाया जा सकता है जब देश में पर्याप्त संसाधनों की उपब्धता हो। इन पर्याप्त संसाधनों को अगर व्यय करने की उचित मद है तो वह शिक्षा है क्योंकि शिक्षा ही विकास की जननी है जो मानव संसाधन को तैयार करने में अपनी महती भूमिका निभाती है। इस सोंच के साथ अब वह समय आ गया है जब हमें शिक्षा पर जल्द सकल घरेलू उत्पाद का 6 प्रतिशत खर्च करना चाहिए क्योंकि इसके अभाव में शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों की मूलभूत सुविधाओं को पूरा किया जाना असम्भव कार्य है। अकादमिक स्तर पर निम्न प्रदर्शन कर रहे विद्यार्थियों जैसे मंदबुद्धि, पिछड़े, हाशिये पर खड़े तथा अन्तर्मुखी आदि स्नातकों विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के विषय में जानकर कोई निर्णायक कदम उठाना चाहिए। ऐसे में जब इन विद्यार्थियों को शिक्षण संस्थान में अपने–पन का वातावरण मिलेगा तो निश्चित ही प्रत्येक दिन यह शिक्षण संस्थान को आने के लिए उत्साहित रहेंगे। इस प्रयास को सफल बनाने के लिए यदि आवश्यक हो तो विभाग प्रमुख या फिर स्वयं कक्षा शिक्षक ऐसे विद्यार्थियों के अग्रजनों से मिलकर समस्या के निराकरण की कोई उपयुक्त योजना बनाये।

निष्कर्ष

संस्थान संतुष्टि एक ऐसी भावना है जिसे स्नातक विद्यार्थियों में विकसित करना प्रत्येक उच्च शिक्षण संस्थान का उत्तरदायित्व है। विद्यार्थियों को शिक्षण संस्थान में पाठयक्रम समाप्ति तक रोके रखने, उनकी अकादमिक उपलब्धि में वृद्धि करने तथा अध्ययन–अध्यापन की प्रक्रिया को रुचिमय बनाने में संस्थान संतुष्टि की अहम् भूमिका होती है। इन अपेक्षाओं को तभी पूरा किया जा सकता है जब किसी शिक्षण संस्थान के विद्यार्थी उस संस्थान के बाहरी तथा आंतरिक वातावरण से अन्तक्रियात्मक रूप से जुड़े हों। उस शिक्षण संस्थान से जहाँ वे अध्ययनरत है उसके प्रति अपनेपन का भाव रखते हों। शिक्षकों को आदर्शमय मानकर उनका सम्मान करते हों। शिक्षण संस्थान के प्रति विद्यार्थियों के इस जुडाव को तभी सफल बनाया जा सकता है जब संस्थान अपने मूलभूत उद्देश्यों के लिए कार्य कर रहा हो अर्थात संस्थान अपने विद्यार्थियों की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए काम कर रहा हो।

स्नातक स्तर पर विद्यार्थी आयु के एक परिपक्व अवस्था पर पहुँच चुके होते हैं। अब उन्हें प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की तरह टाट–पट्टी या दरी आदि पर बैठकर पढ़ना आत्म सम्मान पर आघात पहुंचता है। यह वह स्तर होता है जहाँ विद्यार्थी अध्यापक और उसके द्वारा प्रयोग में लायी जा रही शिक्षण विधि को विद्यार्थी केन्द्रित बनाने के पक्ष में होते हैं। ऐसे में जो शिक्षक गैर–लोकतान्त्रिक तरह से अध्यापन करते हैं उनके खिलाप यह विद्यार्थी विभिन्न आन्दोलनों को अंजाम देते रहते हैं। इस प्रकार यह वह अवस्था है जहाँ विद्यार्थी अध्ययन–अध्यापन के अलावा अपनी अन्य आवश्यकताओं का अनुभव महसूस करने लगता है और उन्हें पूर्ण कराने की भरसक कोशिश करता है। इस समस्या के निवारण के लिए हमारे शैक्षिक प्रबंधकों को चाहिए कि शिक्षण संस्थानों में इन विद्यार्थियों की आधारभूत आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए पर्याप्त संसाधनों को जुटाने का प्रयास करें।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests

solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

वेबसाइट सन्दर्भ सूची–

- https:@www-education-gov-in
- https:@www-eoibucharest-gov-in
- https:@www-drishtiias-com
- https:@www-cbseacademic-nic-in
- https:@@en-wikipedia-org
- https:@@www-census2011-co-in

Cite this Article

'अमर सिंह, डॉ0 गौरव राव', "स्नातक विद्यार्थियों में संस्थान संतुष्टि का महत्व", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal, ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:11, November 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i11004

Published Date- 03 November 2025